नयी सुबह

हम बच्चों की ..

ॐ

चिन्मय विद्यालय , बोकारो

संपादक मंडल -:

ज्योति दुबे

सम्पादन सहयोग एवं अंक - सज्जा :

अंशु उपाध्याय

संपादकीय विभाग : -

हिन्दी विभाग

तकनीकी एवं सम्पादन समूह :

अंकित सारंगी

अनीश कुमार

शिवप्रिया शर्मा

अनुष्का

हर्षिता सिंह

अनिकेत जैसवाल

इप्शिता तिवारी

हिया परवीन

इस अंक में

गुरु ध्यानम	03
संपादक की कलम से	04
मातृ	05
बूझो तो जानें	07
पापा	08
साक्षात्कार	09
शब्द निर्झर	11
प्रकृति का इशारा	12
संस्कृत श्लोक एवं अर्थ	13
मजेदार तथ्य	14
मेरी माँ	15
जामुन के फायदे	16
हर घर तिरंगा	17
आँखें	18
तुलसीदास	19

गुरु ध्यानम्

दूसरों के लिए वही चाहो जो तुम अपने लिए चाहते हो ,

यही मनुष्य धर्म है ।

- महर्षि वेद व्यास

संपादक की कलम से

प्यारे बच्चों ,

बारिश जहां सारी धरा को खूबसूरत बनाती है वहीं कई बीमारियों को आमंत्रित भी करती है। बीमारी से बचना है तो सावधानी और घरेलू उपाय करें तथा कुछ बातों पर जरूर गौर करें। जैसे -घर के चारों ओर पानी जमा न होने दें, गड्ढों को मिट्टी से भर दें, रुकी हुई नालियों को साफ़ करें, बाहर का भोजन कम से कम करें पानी उबालकर पीएं। दूसरी ओर त्योहारों का शिलशिला भी शुरू होने वाला है, जैसे -स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी आदि। त्योहारों की खुशी में अपने अर्धवार्षिक परीक्षा की तैयारी ना भूलें। अतः कुल मिलाकर स्वास्थ्य, त्योहारों की खुशियां पढ़ाई सभी में एक संतुलन बनाकर आगे बढ़ना भी महत्वपूर्ण कार्य है। उम्मीद है आप सभी कार्यों में समन्वय बनाकर संतुलन के साथ आगे बढ़ेंगे खुश रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे।

धन्यवाद

मातृ

माँ ही है सेवा और माँ ही है पूजा
माँ बिना कोई जीव नहीं,
जीव नहीं संसार नहीं
जननी का सम्मान करो,
गुरू होती है माता।

माँ के आँचल में जो रहा,
ममता के शरण में वो रहा
विपदाएँ उनके समीप न जाती हैं,
उन्हें घाव न देती हैं
जब माँ खड़ी हो जाती है,
विघ्न भी घुटने टेकता,
उनको नमन वह करता।

माता जब वरदान देती है,
प्रजा में वृद्धि होती है
माँ के अश्रू जब श्राप देते हैं,
कष्टों का बहार लाते है

माता जब भी पुकारती है,

सारी सृष्टि दौड़ लगाती है।

संसार के बगीचे में अनेकों फूल व काँटें हैं

माँ के आँगन में तो केवल हैं ममता के ही फूल

ये जग ढोंग, पाखंड से भरा पड़ा है,

एक माँ ही बड़ी भोली है

काले अंधेरों में जब संसार हाथ छोड़ता,

साथ छोड़ता है

तब माँ अपनी दोनों बाहें खोल खड़ी हो जाती

जब-जब मानव कष्ट में होता,

माँ भी अश्रू रोक न पाती है।

माँ का आदर करो, माँ से प्रेम करो

माता सबसे दयालु,

सबसे सहनशील व सबसे भोली है

माँ जीवन का सार है,

उनको हर पल याद करो।

1. ऊपर भी जाती है नीचे भी जाती है पर अपने जगह से हिलती नहीं है ।
2. एक सुई दरजी के हाथ में ऐसे कमाल की जो कपड़े सिलाई काम न आयी।
3. इतनी नाजुक है ये चीज, कुछ बोलते हो टूट जाएगी ।
4. जितना आगे बढ़ोगे उतना पीछे छोड़ते जाओगे ।
5. गला है पर सर नहीं, बाहें है पर हाथ नहीं ।
6. जमीन में मरा दबा दो, जिन्दा होकर बहार आऊंगा ।
7. एक बार आवाज़ दोगे तो मैं कई बार आवाज़ वापस दूंगा ।
8. शहर है पर घर नहीं, जंगल है पर पेड़ नहीं, नदी है पर पानी है ।
9. इस्तेमाल करने से घिस जाती हूँ गोल गोल घुमाने से फिर बढ़ जाती हूँ ।
10. वो क्या है जो इंसान के लिए हानिकारक है पर लोग फिर भी पी जाते हैं ।

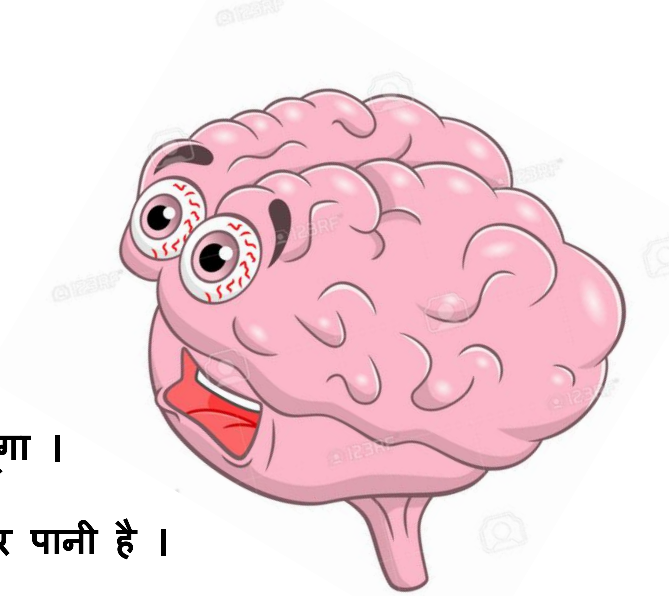

1 सीढ़ी 2 घड़ी की सुई 3 खामोशी 4 कदम 5 शर्ट 6 बीज 7 गूँज 8 नक्शा 9 पेंसिल 10 गुस्सा

पापा

पापा हर फर्ज निभा
जीवन भर कर्ज चुकाते हैं।
बच्चे की एक खुशी के लिए,
अपने सब भूल जाते हैं।

फिर क्यों ऐसे पापा के लिए
बच्चे कुछ कर नहीं पाते ॥
ऐसे सच्चे पापा को क्यों
पापा कहने में सकुचाते।

बिन बताए मेरी हर बात जान जाते हैं
मेरे पापा मेरी हर बात मानते हैं,
पिता वो है जो बेटी को कंधे पर बिठा
दुनिया के मेले दिखाते है।

पिता वो हैं जो अपनी औलाद के लिए,
उम्र भर की कमाइ खुशी से
खर्च कर जाते हैं...!
मुसिबत की घड़ियों में अक्सर
मेरे साथ खड़े थे वो,

मेरी गलतियाँ भी फिर भी,
मेरे खातिर, लड़े थे वो ।
सुशी से पापा ने मुझपर
अपनी 'ख्वाहिशे 'लुटा दी,
मैं बस मुस्कुराया और
पापा ने पूरी दुनिया दिला दी।

- आर्या 8 अ

<u>साक्षात्कार -</u>

डॉक्टर एस.सी. मुंशी

(विभागाध्यक्ष शिशु विभाग मुस्कान हॉस्पिटल चास)

मैं हार्दिक बंब कक्षा 8 द का छात्र आपके समक्ष एक साक्षात्कार लेकर प्रस्तुत हुआ हूं जब मैंने डॉक्टर मुंशी के साथ थोड़ा समय व्यतीत किया।

प्रश्न- डॉक्टर साहब कृपया अपने बारे में बताएँ?

उत्तर -मेरा नाम डॉक्टर एस. सी. मुंशी है। मैं यहाँ मुस्कान हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के शिशु विभाग में 2005 से सेवा दे रहा हूँ।

प्रश्न -अपने हॉस्पिटल के कार्य प्रणाली के विषय में कुछ बताएँ ।

उत्तर- पहले BGH में कार्यरत रहते हुए आ रही प्रशासनिक कठिनाइयों की वजह से त्यागपत्र देने के बाद,मैंने इस प्राइवेट हॉस्पिटल की नींव रखी। जिसमें मेरे साथ डॉक्टर मनोज श्रीवास्तव, डॉक्टर शाहनवाज ने मेरी विशेष मदद की और जिसका मुख्य उद्देश्य बोकारो निवासियों की सेवा करना है।

प्रश्न- अपने परिवार व युवावस्था तथा अपने जीवन के बारे में कुछ बताएँ ।

उत्तर - मेरी प्रारंभिक शिक्षा धनबाद में हुई व युवावस्था में गरीबी के कारण बहुत ही कठिनाई हुई। राँची में मेडिकल कॉलेज पहुँचने तक स्कॉलरशिप एवं मित्रों के सहयोग से पढ़ाई में दक्ष रहते हुए अपनी पढ़ाई पूरी की।परिवार में पत्नी और दो बेटियाँ हैं जो कि अपने-अपने परिवार में अपने पैरों पर खड़ी होकर परिवार व समाज के कार्य में अग्रणी रहती हैं।

प्रश्न- सुना है आप नियमित रूप से गाँव-गाँव जाकर नि:शुल्क कैंप का आयोजन करते हैं!

उत्तर - जी हां! बिल्कुल सही सुना है आपने, हम अपनी पूरी टीम के साथ आस-पास के गाँव में जाकर ना सिर्फ नि:शुल्क उपचार बल्कि जरूरी दवाइयाँ भी मुफ्त उपलब्ध कराते हैं क्योंकि मैंने भी अपना जीवन यापन गरीबी में किया इसलिए गरीबों के दुख दर्द दूर करने के लिए मैं हमेशा तत्पर और प्रयासरत रहता हूँ।

प्रश्न- आज के छात्रों को आपकी तरफ से क्या संदेश है?

उत्तर - प्रिय छात्रों! आप सभी अपने-अपने क्षेत्र में, जीवन में सफलता हासिल करें दूसरों की बजाय अपने आप से प्रतिस्पर्धा रखते हुए नए- नए आयाम स्थापित करें। याद रखें हम सिर्फ पैसों को महत्व न देते हुए अपने आदर्श एवं मूल्यों के साथ कभी कोई समझौता न करें। मैं केवल नसीहत नहीं देना चाहता हूं बल्कि मैं भी स्वयं इन्हीं मूल्यों को अपनाता आया हूँ ।

प्रश्न- भविष्य को लेकर आपकी क्या योजनाएँ हैं? कृपया संक्षिप्त में बताएँ।

उत्तर- वर्तमान में मैं अपनी नियमित सेवाएँ चास स्थित मुस्कान हॉस्पिटल में तथा शाम में सिटी सेंटर स्थित मुस्कान आई केयर में भी देता हूँ।भविष्य में मैं अपने नि:शुल्क कैंप बढ़ाने पर विचार कर रहा हूँ, जहाँ अधिक से अधिक गरीब वर्ग के लोगों की सेवा करने का मौका होगा।

शब्द निर्झर

चित्र देखकर आपके मन में जो भी भाव उत्पन्न हो रहे है , उस पर कविता या कहानी लिखें और इस ईमेल- nayisubahmagazine@gmail.com पर भेज दे :

<u>प्रकृति का इशारा</u>

पर्वत कहता तुम भी शीश उठाकर,

हम जैसे ऊंचे बन जाओ।

सागर कहता है लहरा कर,

अपने मन में गहराई लाओ।

पेड़, पौधे कहते हमसे,

दो सबको छाया और शीतल ।

चिड़िया कहती हम जैसे मीठे बन जाओ,

कड़वाहट को भूल जाओ ।

फूल कहते हम जैसे बनकर,

सब के जीवन मे सुगंध फैलाओ ।

गगन कहता समेट लो फैलो

पूरा तुम इतने संसार ।

- अदिति सिंह देव , 6/F

संस्कृत श्लोक एवं अर्थ

सुखार्थिनः कुतोविद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्।।

अर्थ - सुख चाहने वाले को विद्या कहाँ से, और विद्यार्थी को सुख कहाँ से, सुख की इच्छा रखने वाले को विद्या और विद्या की इच्छा रखने वाले को सुख का त्याग कर देना चाहिए।

न विना परवादेन रमते दुर्जनोजन:।
काक:सर्वरसान भुक्ते विनामध्यम न तृप्यति।।

अर्थ - लोगों की निंदा किये बिना दुष्ट व्यक्तियों को आनंद नहीं आता। जैसे कौवा सब रसों का भोग करता है। परंतु गंदगी के बिना उसकी तृप्ति नहीं होती।

सर्वे क्षयान्ता निचयाः पतनान्ताः समुच्छ्रयाः।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्।।

अर्थ- सभी प्रकार के संग्रह का अंत क्षय है। बहुत ऊंचे चढ़ने के अंत नीचे गिरना है। संयोग का अंत वियोग है और जीवन का अंत मरण है।

आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं मन्त्रमैथुनभेषजम्।
दानमानापमानं च नवैतानि सुगोपयेत्।।

अर्थ- हर व्यक्ति को अपनी आयु, गृह के दोष, मैथुन, मन्त्र, धन, दान, औषधि, मान-सम्मान, अपने अपमान, अपनी योग्यता को हमेशा सभी से छुपाकर ही रखना चाहिए अन्यथा कभी भी नुकसान झेलना पड़ सकता है ।

मजेदार तथ्य

अंतरिक्ष में पृथ्वी जैसा शोर नहीं होता, यह पूरी तरह से मौन है।

चांद पर अंतरिक्ष यात्रियों के पैरों के निशान लाखों साल तक रहेंगे।

अंतरिक्ष का तापमान पूर्ण शून्य के करीब होता है।

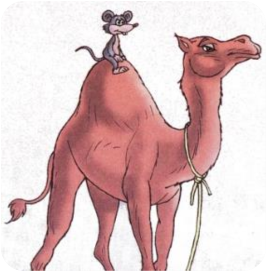

बिना पानी पिए चूहा ऊंठ से भी अधिक दिनों तक जीवित रह सकता है।

बाज 3.2 किलोमीटर दूर अपने शिकार को देख सकता है।

एक औसत पेंसिल से 34 मील लंबी रेखा खींची जा सकती है।

ऑक्टोपस एक ऐसा जीव है जिसके पास 9 दिमाग और 3 दिल होते हैं। इसका रक्त नीले रंग का होता है ।

दुनिया का सबसे तेज रेंगने वाला सांप ब्लैक मांबा सांप है जो 1 घंटे में 17 किलोमीटर तक रेंग सकता हैं।

<u>मेरी मां</u>

एक -दो - तीन - चार ,
मेरी मां करती है मुझसे बहुत प्यार।
पांच - छ: - सात - आठ ,
नहीं छोड़ेगी वह मेरा साथ।

जब भी मुझे लगता है डर ,
मां सहलाती है मेरा सर।
बचपन में खिलाए दूध मलाई ,
सोचे हमेशा मेरी भलाई।

मां तो जन्नत का फूल है ,
मेरे सारी नादानियां उसे कबूल है।
हां मां, मैं ही सबसे अच्छी हूं ,
क्योंकि मैं तेरी बच्ची हूं।

- निमराह फ़ातिमा ६/अ

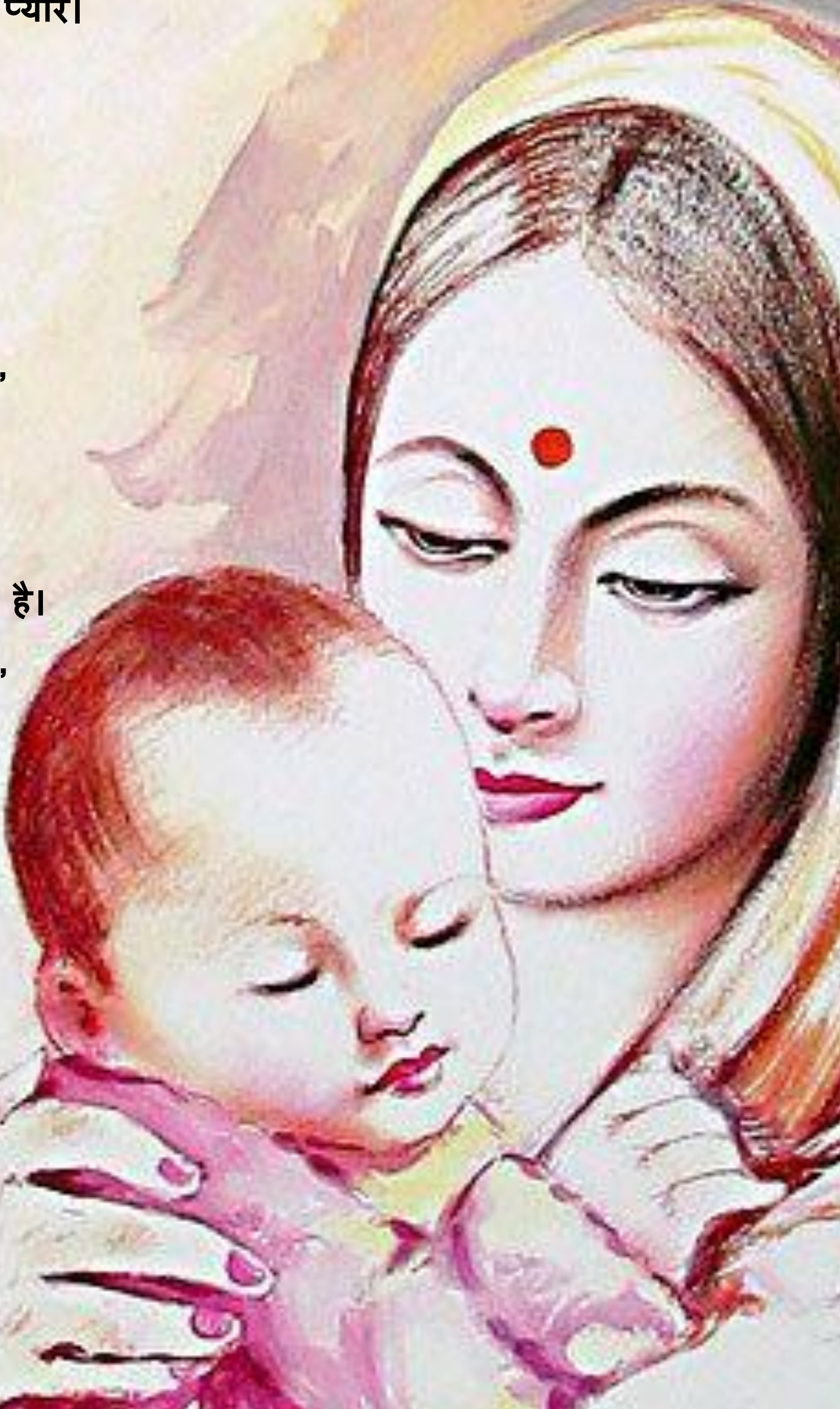

जामुन के फायदे

- जामुन अग्निप्रदीपक, पाचक, स्तंभक रोकने वाला तथा वर्षा ऋतु में अनेक रोगों में उपयोगी है |
- जामुन में लोहतत्व पर्याप्त मात्रा में होता है | अतः पीलिया के रोगों में जामुन का सेवन हितकारी है |
- जामुन यकृत, तिल्ली और रक्त की अशुद्धि को दूर करता है |
- जामुन खाने से रक्त की अशुद्धि दूर हो जाती है तथा लालिमा युक्त बनता है |
- जामुन मधुमेह, अतिसार, पथरी, पेचिस, संग्रहणी, यकृत के रोगों और रक्तजन्य विकारों को दूर करता है |
- मधुमेही के रोगीयों के लिए जामुन के बीज का चूर्ण सर्वोत्तम है | मधुमेह के रोगी को नित्य जामुन खाने चाहिए | अच्छे पक्के जामुन सुखाकर बारीक कूटकर बनाया गया चूर्ण प्रतिदिन १-१ चम्मच सुबह-शाम पानी के साथ सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है |
- वायु प्रकृति वाले जामुन के ऊपर नमक, जीरा पावडर और संतकृपा चूर्ण लगा के जामुन खाये |
- प्रदर रोग कुछ दिनों तक वृक्ष की छाल के काढ़े में शहद अर्थात मधु मिलाकर दिन में दो बार सेवन करने से स्त्रीयों में प्रदर रोग मिट जाता है |
- जामुन के बीज को पानी में घिसकर मुँह पर लगाने पर मुहाँसे मिटते है |
- जामुन की गुठलीयों को पीसकर शहद में मिलाकर गोलियाँ बना ले| २-२ गोली नित्य चार बार चुसो| इससे बैठा गला खुल जाता है, आवाज का भारीपन ठीक हो जाता है |
- जामुन की गुठली का ४-५ ग्राम चूर्ण सुबह-शाम पानी के साथ लेने से स्वप्नदोष ठीक होता है |
- जामुन के पेड़ की पत्तियाँ ज्यादा न पकी हुई, न ज्यादा मुलायम लेकर पीस ले उसमे जरा-सा सेंधा नमक मिलाकर उसकी गोलियाँ बना ले १-१ गोली सुबह-शाम लेने से कैसे भी तेज दस्त हो बंद हो जाते है |
- जामुन भूख बढ़ाने वाले है | वर्षा ऋतु को उदर रोगों को ठीक रखने में मदद करेंगे | रक्त की शुद्धि और चेहरे पर लालीमा लाने वाले है |

सावधानी - जामुन सदा भोजन के बाद ही खाना चाहिये | भूखे पेट जामुन बिलकुल न खाये | जामुन खाने के बाद तत्काल दूध न पीये |

<u>हर घर तिरंगा</u>

आजादी के साल पचहत्तर

पूरे होने को आए

आजादी के साल पचहत्तर

पूरे होने को आए

आएं हम सब भी अबकी

हर-घर मे तिरंगा फहराएँ।

ये पल विशेष, ये खुशी विशेष

ये पल विशेष, ये खुशी विशेष

महसूस करें हर कोई

केंद्र नीत सरकार भी अबकी

ऐसी नीत है लाई।

खास जनों से आम जनों में

खास जनों से आम जनों में

ये गर्व की घड़ी आई

आजादी हम सबकी है

चहूँ ओर उमंग, है छाई।

गर्व युक्त सम्मान सहित

गर्व युक्त सम्मान सहित

आजादी पर्व मनाएँ

आएं हम सब भी अबकी

हर घर में तिरंगा फहराएं।

- प्रतीक कुमार 9 G

आँखें

आँखें ही हैं जो बहुत कुछ ,

बिन बोले कह जाती हैं।

कभी इनमें प्रेम तो,

कभी बेबसी नज़र आती है।

कभी सभी बंधनों को तोड़ती,

कभी बेफ़िक्री दिख जाती है।

क्यों इन्हें आजमाते हैं लोग,

इनमें खुलकर जीने की,

ललक नज़र आती है।

यहीं वो ज्वाला है,

जो बनाए तो सृष्टि, और

बिगाड़े तो, विध्वंसक प्रलयकारी है।

हर नज़र कुछ कहती है मुझसे,

क्या कहूँ बेबसी अपनी,

दो आँखें कहाँ,

इतनी आँखें पढ़ पाती हैं?

जब कुछ लाचार आँखें देखकर भी,

नहीं कुछ कर पाती हूँ।

तब मन की आँखें बंद कर लेने को,

विवश हो जाती हूँ।

डर लगता है मुझे ,सिर्फ अगर,

तो बस ये आँखें हैं।

ये मूक होकर भी कितनी,

बेचैन-वाचाल हैं।

इन्हें पढ़ना सीखकर ही,

शायद मैं साक्षर हुई।

यही साक्षरता मेरे मानवता की,

साक्षी कुंजी है।

यही बस यही मेरे,

जीवन की अब पूँजी है।

- ज्योति दूबे (शिक्षिका)

जीवन परिचय

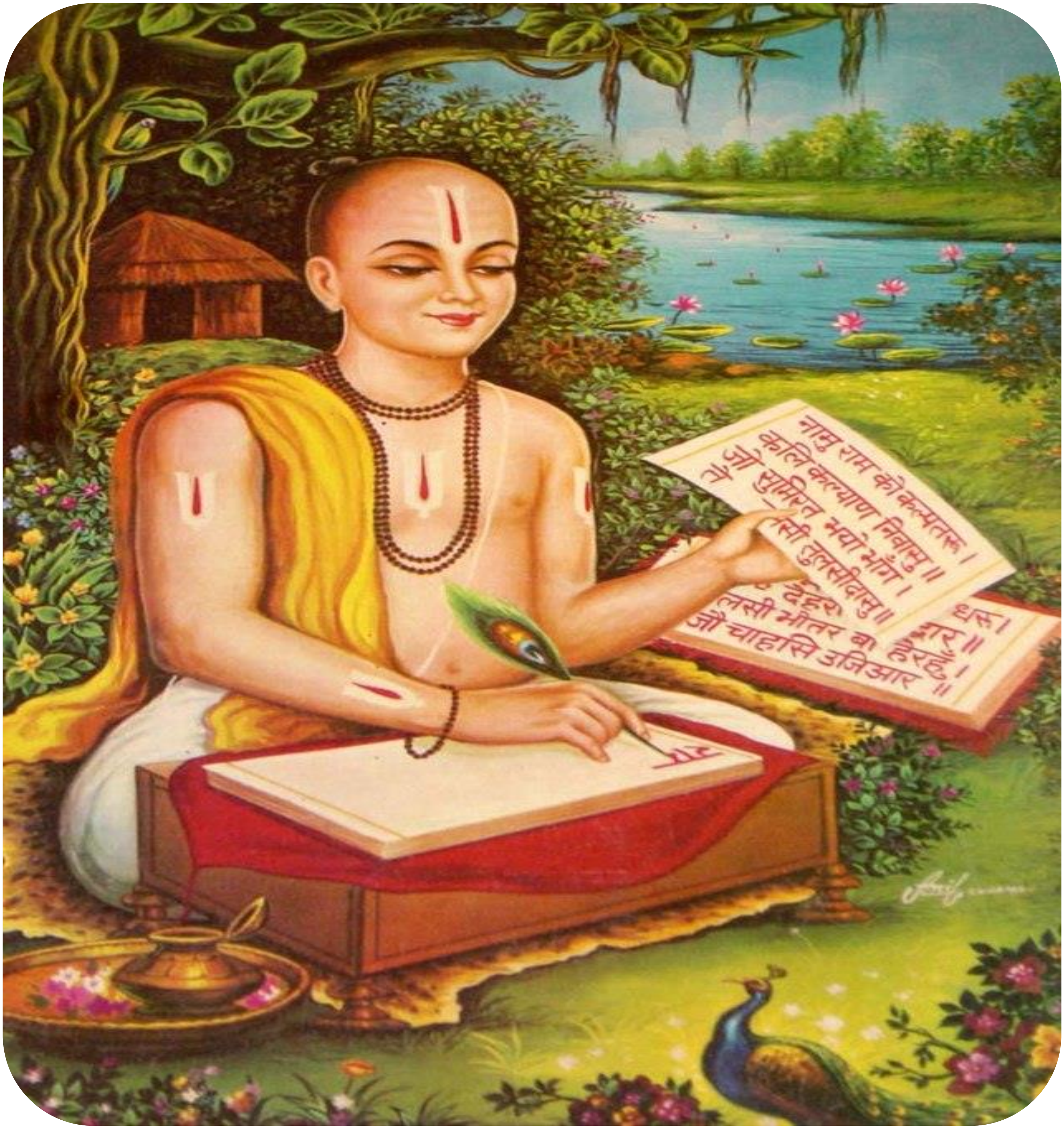

गोस्वामी तुलसीदास (1511 - 1623)

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी साहित्य के महान (श्रेष्ठ) सन्त कवि थे। रामचरितमानस इनका गौरव ग्रन्थ है। इन्हें आदिकाव्य 'रामायण' के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार माना जाता है ।

पंद्रह सौ चौवन विसे, कालिन्दी के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धरयो शरीर ।।

इस आधार पर उनका जन्म वर्ष सम्वत 1554 वि. अथवा सन् 1497 ई. है। अधिकतर विद्वान बाँदा जनपद के राजापुर ग्राम को उनका जन्म-स्थान स्वीकार करते हैं। इनके पिता का नाम - पंडित आत्माराम दूबे और माता का नाम हुलसी था। ऐसा इनके विषय में कहा जाता है -

पिता आत्माराम द्विवेदी, हुलसी जिनकी माता थी।
राजापुर के कवि तुलसी थे, मन में भक्ति राम की थी।
ब्रजभाषा अरु अवधी भाषा, पर अधिकार जिसे था।
विविध शैलियों में लेखन पटु, दास्य भक्त तुलसी था।।

गोस्वामी तुलसीदास जी अभुक्त मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए थे, इससे उनके माता- पिता ने उन्हें त्याग दिया था।गोस्वामी जी जब उत्पन्न हुए तब पाँच वर्ष के बालक के समान थे और उनके पूरे दाँत भी थे। वे रोये नहीं, केवल 'राम' शब्द उनके मुँह से सुनाई पड़ा । बालक को राक्षस समझ पिता ने उसकी उपेक्षा की। पर माता ने उसकी रक्षा के लिए उद्विग्न होकर उसे अपनी एक दासी मुनिया को पालने - पोसने को दिया और वह उसे लेकर अपनी ससुराल चली गयी। पाँच वर्ष पीछे जब मुनिया भी मर गयी तब राजापुर में बालक के पिता के पास संवाद भेजा गया, पर उन्होंने बालक को लेना स्वीकार न किया। किसी प्रकार बालक का निर्वाह कुछ दिन हुआ। अंत में बाबा नरहरिदास ने उसे अपने पास रख लिया और कुछ शिक्षा-दीक्षा दी। इन्हीं गुरु से गोस्वामी जी राम कथा सुना करते थे। इन्हीं अपने गुरू नरहरिदास के साथ गोस्वामी जी काशी में आकर पंचगंगा घाट पर स्वामी रामानंद जी के स्थान पर रहने लगे वहाँ पर एक परम विद्वान महात्मा शेष सनातन जी रहते थे जिन्होंने तुलसीदास जी को वेद-वेदांग, दर्शन, इतिहास, पुराण, आदि में प्रवीण कर दिया। 15 वर्ष तक अध्ययन करके गोस्वामी जी फिर अपनी जन्मभूमि राजापुर लौटे, पर वहाँ इनके परिवार में कोई नहीं रह गया था और घर भी गिर गया था।

यमुना पार के ग्राम के रहने वाले भारद्वाज गोत्री एक ब्राह्मण यम द्वितीया को राजापुर में स्नान करने आये।उन्होंने तुलसीदास जी की विद्या, विनय और शील पर मुग्ध होकर अपनी कन्या रत्नावली जी के साथ विवाह कर दिया। इसी पत्नी के उपदेश से गोस्वामी जी का विरक्त होना और भक्ति की सिद्धि प्राप्त करना प्रसिद्ध है। तुलसीदास जी अपनी इस पत्नी पर इतने अनुरक्त थे कि एक बार उसके मायके चले जाने पर वे बढ़ी नदी पार करके उससे जाकर मिले। स्त्री मे उस समय ये दोहे कहे "उस

लाज न लागत आपको दौरे आयहु साथ।
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा कहाँ मैं नाथ।।
अस्थि - चर्ममय देह सम तामे जैसी प्रीत।
तैसो जौ श्रीराम महँ होति न तौ भवमीत ।।

यह बात तुलसीदास जी को ऐसी लगी कि वे तुरंत काशी आकर विरक्त हो गये। इस वृतांत को प्रियादास जी ने 'भक्तमाल' को अपनी टीका में दिया है और तुलसी चरित' और ' गोसाईचरित्र में भी उसका उल्लेख है। गोस्वामी जी घर छोड़ने पर कुछ दिन काशी में, फिर काशी से अयोध्या जाकर रहे। उसके पीछे तीर्थ यात्रा करने निकले और जगन्नाथ पुरी, रामेश्वर, द्वारका होते हुए बदरिकाश्रम गये। वहाँ से ये कैलाश और मानसरोवर तक निकल गये। अंत में चित्रकूटमे बहुत दिनों तक रहे जहाँ अनेक संतों से इनकी आकर ये भेंट हुई। इसके अनंतर संवत् 1631 में अयोध्या जाकर इन्होंने रामचरितमानस का आरंभ किया और उसे 2 वर्ष 7 माह 26 दिन में पूर्ण किया।

"संवत् सोलह सय इकतीसा। करयू कथा हरिपथ धरि
शीशा नौमी भौमवार मधुमासा। अवधपुरी यह चरित प्रकाशा ।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस' की रचना चैत्रशुक्ल पक्ष (रामनवमी) मंगलवार वि.स. 1631 [सन् 1574] ई. में प्रारम्भ की। गोस्वामी तुलसी दास जी ने रामचरितमानस की कथा अपने गुरू नरहरिदास से सूकरक्षेत्र में सुनी। इस संदर्भ में उन्होंने मानस में लिखा है

"मैं पुनि निज गुरु सन सुनी कथा सो सूकर खेत।
समुझ नहीं तस बालपन, असि रहे अचेत।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने "राम की उपासना दास्य भी में की है तथा सीता की वन्दना - माँ, कन्या, प्रिया तीनों रूपों में की है। रामचरित मानस की पूरी कथा भगवान शंकर ने पार्वती के शंका निवाणार्थ सुनायी हैं। तुलसीदास ने रामचरितमानसु का ढाँचा जायसी के महाकाव्य पद्मावत' से लिया है।

'श्रीरामचरितमानस' में सात काण्ड हैं।

[1] बालकाण्ड [2]अयोध्या काण्ड (हृदयकाण्ड) [3]अरव्यकाण्ड [4]किष्किन्धाकाण्ड
[5]सुन्दर काण्ड (सबसे सुंदर काण्ड) [6] लंकाकाण्ड [युद्धकाण्ड] (7)उत्तरकाण्ड [ज्ञानदीपक काण्ड]

मानस के 7 काण्डों को गोस्वामी जी ने मानसरोबर की 7 सीदीया माना है।

रामचरितमानस का कुछ अंश काशी, कुछ अंश चित्रकूट और कुछ अंश अयोध्या में लिखा गया हैं।

'श्रीरामचरितमानस' के इस अमर गायक का देहावसान संवत् 1680 वि. अर्थात सन् 1623 ई. में हुआ।

'सवत सोलह सौ अशी, 'असी गंगा के तीर।
श्रावण कृष्णा तीज शनि, तुलसी तज्यो शरीर।

रचनाएँ- श्रीरामचरितमानस, रामलला नहछू, वरखै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, विनयपत्रिका, कवितावली [हनुमान बाहुक], गीतावली. दोहावली, रामाज्ञाप्रश्नावली, श्रीकृष्ण गीतावली, वैराग्य संदीपनी

- मनोज कुमार तिवारी (शिक्षक)

नन्हे छायाकार

अगला अंक